Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
October 2026
ISSN 2229-3388

अमरकांत की साहित्य में युवा वर्ग के स्वरूप का एक अध्ययन

प्रियंका (शोध छात्रा)

डा0 ऋचा वर्मा . शोध र्निदेशिका

विशय हिन्दी कला विभाग, फैक्लटी ऑफ मानविकी मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेसवां, अलीगढ़

साराश, आधुनिक युग के कथाकारों में अमरकांत का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। अमरकांत को प्रेमचंद के बाद दूसरे यथार्थवादी लेखक के रूप में जाना जाता है। इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से युवा वर्ग में व्याप्त समस्याओं, कुंठाओं और आ ाओं का यथार्थ वर्णन किया है, जो अन्य रचनाकारों में कम देखने को मिलता है। वे स्वयं मध्यम वर्ग से होने के कारण, उस जीवन को बड़ी बारीकी से देखा है, उसी अनुभव को भाब्दों का रूप देकर अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। अध्याय के अनुसार युवा वर्ग में व्याप्त प्रत्येक स्थिति जैसे युवाओ में बढ़ रही अति कल्पना ीलता, अकर्मण्यता, गलत संगति का प्रभाव, मित्रता के पीच्छे का धोखा, स्वाभिमान व आदर्शवादी सोच को प्रस्तुत किया है। कभी–कभी युवा वर्ग अपनी समझदारी से परिवार के बदलते हालातों पर काबू पा लेते है तो कही देश पर गर्व करने के अवसर भी देता है। इस भोध पत्र के माध्यम से अमरकांत की कहानियों के युवा वर्ग के मन में व्याप्त समस्याओं और आदर्शों को समझने का प्रयास किया गया है।

मुख्य भाब्द, अमरकांत, दोपहर का भोजन, युवा पीढ़ी, दिशाहीन, हताश आदि।

परिचय, अमरकांत को एक सशक्त कथा साहित्यकार के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपनी कहानियों में प्रत्येक विशय वस्तु को स्थान देकर यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है। युवा वर्ग प्रत्येक साहित्य की महत्वपूर्ण अवधारणा रहा है। जिसका मुख्य उद्दे य युवा वर्ग को स ाक्त व जागृत करना है। आज की हमारी युवा पीढ़ी दिशाहीन, हताश, निराशा व असंतोश से परिपूर्ण दिखाई देती है, इन्ही सब समस्याओं के निवारण के लिए अमरकांत ने अपनी कहानियों में इन विशयों को लिया और इनका समाधान करने का भी प्रयत्न किया है इनका यथार्थवादी दृश्टिकोण युवा वर्ग के लिए रामबाण सिद्ध हुआ क्योंकि इन्होंने भाब्दों के माध्यम से जमीनी हकीकत को बयां किया है, जो प्रत्येक व्यक्ति के साथ घटित होती है। यही कारण है कि पाठक सहज ही उनकी कहानियों के साथ जुड़ जाता है। इनकी कहानियों ने भटक रही युवा पीढ़ी का मार्ग प्र ास्त करने का कार्य भी किया है।

1 युवा वर्ग का पारिवारिक संबंध

अमरकांत की कहानियों में युवा वर्ग का पारिवारिक संबंध काफी हद तक परिवार के साथ मेल खाता नजर आया है 'दोपहर का भोजन ' कहानी में प्रत्येक युवा पात्र घर में आते ही प्रत्येक सदस्य के विशय में पूछता है ''राजेंद्र घर में प्रवेश करते ही पूछता है मोहन कहां है? कड़ी धूप हो रही है?''[1] उसका यह पूछना दर्शाता है कि उनका अपने परिवार के सदस्यों के साथ गहरा लगाव है। इसी प्रकार 'डिप्टी कलेक्टर' कहानी में जब सकलदीप बाबू अपने बेटे के लिए जरूरत की सारी सामग्री प्रदान करते है तो ''नारायण को भाक होता है कि पिताजी इतना सब कहां से कर रहे हैं, नारायण ने जमुना से एक–दो बार खोद–खोद कर पूछा था, कि इतने रुपए कहां से आते है एक बार तो उसने यहां तक कह दिया था कि यह फल, मेवा और दूध बंद कर दो, बाबूजी बेकार में फिजूल खर्च कर रहे है, मैने कह दिया , कि तुमको फिक्र करने की जरूरत नहीं है, तुम बिना किसी चिंता के मेहनत करो बाबू जी को इधर बहुत मुकदमें मिल रहे है।''[2]

2. युवा पीढ़ी में व्याप्त अती कल्पनाशीलता व अकर्मण्यता

अमरकांत नें अपनी कहानियों में आद ार्वादी व्यक्तित्व का वर्णन किया है तो वे अति कल्पना ीलता व अकर्मण्यता का वर्णन करने से भी पीच्छे नहीं हटे है, उन्होंने 'गगनबिहारी' कहानी के माध्यम से दिखया है कि एक युवा कल्पना तो न जाने क्या–क्या कर सकता है लेकिन जब बात करने की आती है तो दिन पद दिन टालता रहता है 'गगनबिहारी' कहानी का सुंदरलाल नामक पात्र पहले होम्योपैथिक डॉकटर बनने की सोचता है, फिर गांव जाकर खेती करने की, यह सब नहीं कर पाया तो फिर व्यापार करने की तो कहीं बिजनेसमैन बनने की निरंतर कल्पना करता रहता है लेकिन जब बात करने की आती है'' तो सोचता हूं अगले हफ्ते चला जाऊं हफ्ता आया और निकल गया। उसके पिताजी ने टोका अगर जाना हो तो देर करने से कोई लाभ नहीं खूब सोच–समझ लो तबीयत तबीयत की बात होती है, नहीं करती तो वह भी खुलासा कर दो, नहीं अगले सोमवार को जरूर चला जाऊंगा लेकिन भानिवार रात को ही अपना ध्यान अलग समस्या पर लगाकर टल गया, और अंत में सुंदरलाल बीमार होने पर अपने आप को बहाना देते हुए कहता है, एक दिन खुब तंदुरुस्त और तगड़ा हो कर जाएगाा और कठिन परिश्रम करके कुटुंब व परिवार का नाम ऊंचा करेगा''[3] इसी प्रकार 'अमेरिका की यात्रा' कहानी में भी अति कल्पना ीलता का वर्णन मिलता है हर रोज नए ख्वाब देखना व करना कुछ नहीं, अंत में हार कर घर वालों के सामने समर्पण करना ही भोश था।

3. युवाओं में दिखावे की भावना व मित्रता के पीछे का धोखा

यहां पर अमरकांत ने बिल्कुल बारीक मुद्दों का वर्णन किया है। आजकल आधे से ज्यादा समाज झूठे दिखावे में जीता है, उनकी जमीनी हकीकत कुछ और होती है। हमारी युवा पीढ़ी अपने मित्रों के सामने बातों को बढ़ा–चढ़ा कर बताती है 'म्यान की दो तलवार' कहानी में विकल एक हफ्ता लगातार कविता लिखता है व दिखावा ऐसा करना की मैने तो चलते–चलते ही लिख दी।[4] विकल सीधा हो गया था, अत्यंत लापरवाही से बोला, वैसे ही कोई खास बात नहीं ,बहुत दिनों से ज्योति पत्रिका के संपादक तंग कर रहे थे,कोई भी रचना भेज दो, अपने मित्र है, बात रखनी थी, एक रोज पाँच मिनट में एक कविता लिख दी और उसी दिन भेज भी दी, वही छपी है।[5] यहां पर अमरकांत ने झूठे कवि होने के दिखावे की भावना का वर्णन बहुत ही सुंदर तरीके से किया है इसी कहानी मे आगे अमरकांत ने मित्रता के पीछे के धोखे का वर्णन भी किया है, कि किस प्रकार मदमस्त अपने दोस्त के सत्य को जानकर और फिर, इस सत्य का प्रयोग उसकी नौकरी छुड़ाने के लिए करता हैं। विकल ने मदमस्त से बताया था कि मैने यह नौकरी पाने के लिए झूठ बोला था, मेरे पास बी.ए. की डिग्री नहीं है। उसने अपना मित्र समझ कर बताई। लेकिन मदमस्त उसकी सच्चाई को अपने लिए ब्रह्मास्त्र समझता है, क्योंकि वह इस से उसकी नौकरी छुड़वा कर अपनी पदों उन्नति चाहाता है। इसी में छुपा है मित्रता के पीछे का धोखा।

4. युवा पीढ़ी पर गलत संगति का प्रभाव

युवा पीढ़ी में ज्यादातर देखने को मिलता है कि सही समय पर सही संगति न मिल पाने की वजय से गलत संगत में पड़ कर गलत कार्य करने लग जाते है ऐसा ही वर्णन अमरकांत ने अपनी कहानी 'म्यान की दो तलवार ' में किया है कि किस प्रकार मदमस्त नामक पात्र अपने मित्र को देख–देख कर आ चर्य जनक तरीके से उसके जैसा ही व्यवहार करने लगा, उसके जैसा ही क्यों उस से भी गलत तरीके का व्यवहार करने लगा। ''वह पहले कभी–कभी सिगरेट लगा लेता था, अब धड़ले से फूकने लगा। पान का भौक भी भुरू कर दिया, दोस्तों से गालियों में बात करने के अलावा अपनी हर बात में दाल–भात में तरकारी की तरह स्त्री–पुरुश के विभिन्न अंगों के नाम इस अप्रत्यक्षि और कल्पनातीत निर्लजता के साथ लेने लगा की उसका लोहा करने के अलावा कोई चारा नहीं रह गया हो।[6]

5. युवाओं में स्वाभिमान व आद ार्वादिता

अमरकांत ने अपनी कहानियों में पात्रों के प्रत्येक स्वरूप को प्रकट किया है।इन्होंने यथार्थवादी लेखक होने के कारण समाज के प्रत्येक पहेलू को द र्ाया है। अपनी कहानियों के लिए स्वाभिमानी व आद ार्वादी चरित्रों को भी चुना है 'दो चरित्र' कहानी में दो मित्र मिलकर भिखारियों के विशय में गलत तरीके से वार्तालाप कर रहे थे, लेकिन जब एक तेरह साल का भिखारी लड़का यह वार्तालाप सुनता है

तो वह अपने स्वाभिमान को बनाए रखने के लिए, कोई भी काम करने को तैयार हो जाता है, लेकिन समाज को यह मंजूर नहीं कि ये काम करें। ''जनार्दन लड़के को एक लात जमाते हुए मुंह विकृत कर फुसफुसाहट भरी आवाज में बोला, भाग साले यहां से चोट्टा कही का, लड़का मुंह के बल गिर पड़ा, और जब संभाल कर उठा तो, जनार्दन ने भूएँ ऊपर चढ़ाते हुए कहा, भाग यहां से दोबारा देखना मत यहां इसी प्रकार 'संत तुलसीदास व सौलह साल' कहानी में अमरकांत ने रणबहादुर के माध्यम से प्रस्तुत किया है कि किस प्रकार व्यक्ति अपने आद ाों पर चलकर परीक्षा में उच्च श्रेणी प्राप्त करता है रणबहादुर अपने आदर्शों के रास्ते में आने वाली प्रत्येक बाधा को हटाते हुए, आगे बढ़ता है। अपनी पत्नी द्वारा भेजे गए पत्रों को फाड़ देता है, क्योंकि वह उसे अपने आदर्शों पर चलने से डगमगाते है।

6. एक तरफा प्रेम संबंध व विद्रोही भावना

जहां पर बात युवा वर्ग की हो और प्रेम के विशय में बात ना हो ऐसा स्वभाविक नहीं। युवा वर्ग का सारा खेल ही प्रेम से भुरू होता है। अमरकांत ने बड़े ही गति ाील तरीके से कहानियों में एक तरफा प्रेम का वर्णन किया है ' ुभचिंतन' कहानी से सीता अपने मन ही मन में ज्ञान से प्रेम करने लगति है, ज्ञान को इस बात का पता भी नहीं होता। वह अपने मन में सपने संजोती रहती है, उसके साथ रहने, बैठने व साथ चलने के बहाने ढूंढ़ने लगती है। ज्ञान को जब यह पता चलता है ''ज्ञान को पहले वि वास ही नहीं हुआ था, इसकी वह कल्पना तक नहीं कर सकता था। फिर वह सरलता से उस व्यक्ति के समान क्रोध के व ा होता गया जिसको अच्छे का बदला कुछ दूसरा ही मिलता है। यह छुपा नहीं था कि उसकी भाादी कानपुर में तैय थी'' इसी प्रकार 'लड़की और आद ी' कहानी में नगेंद्र भी एक ऐसा ही पात्र है, जो अपने कॉलेज की सबसे खूबसूरत लड़की से प्रेम करता है और कल्पना करता है ''वह स्वयं को कल्पना में ऐसा आदर्श पुरूश मानता है जिस पर सुंदर से सुंदर और योग्य लड़की अपना सब कुछ न्योछावर करती है।[7] वह कहता है कि लड़की तो लड़की होती है, चाहे किसी भी दे ा और कितनी भी ि ाक्षित हो, भारतीय पुरुश से प्रभावित होकर उसके चरणें में झुकेगी'' पर ऐसा कुछ नहीं होता, कमला पढ़ाई पूरी करके चली जाती है। अमरकांत ने यहां युवा पीढ़ी की सोच पर व्यंग्य किया है, कि अगर व्यक्ति कुछ कर नहीं पाता है तो उसमें लाखों कमी निकाल देता है, जैसा लोमड़ी ने कहा था ''अंगूर खट्टे है''।[8]

7. बेरोजगारी और पारिवारिक दायित्व का वर्णन

अमरकांत ने कहानियों के माध्यम से दिखाया है कि बेरोजगार युवाओं की समाज में क्या हालात है। बेरोजगारी के कारण वे दर–दर भटकने को मजबूर है 'इंटरव्यू' कहानी के माध्यम से उन्होंने दिखाया है

कि, किस प्रकार एक नौकरी के लिए लगभग सो व्यक्ति इंटरव्यू देने आते हैं। यह केवल आज के युवा वर्ग की समस्या नहीं, यह पहले से ही चली आ रही है।[9] यही समस्या 'लड़की की भाादी' नामक कहानी में बेरोजगारी की वजह से एक पढ़ा–लिखा, सुंदर लड़का, कम पढ़ी–लिखी लड़की से सिर्फ इसलिए भाादी करता है, क्योंकि लड़की का पिता उसे मैनेजर की नौकरी दिलाने की बात कहता है। बेरोजगारी के कारण आज का युवा अपने सपनों के साथ समझोता करने को भी तैयार है। इस भाादी से वह बेरोजगारी व पारिवारिक दायित्व दोनों का निर्वाह करता है।[10]

8. नौकरी की लालसा

अमरकांत ने अपनी कहानियों में दिखाया है कि, युवा पीढ़ी नौकरी को लेकर कितनी उत्सुक है। एक युवा नौकरी पाने के लिए दिन–रात मेहनत करता है, क्योंकि हमारे समाज में एक बच्चे के मन में बचपन से ही ये बातें डाल दी जाती है कि, उसे बड़े होकर नौकरी करनी है व बहुत पैसा कमाना है। जब उसे बार–बार यही बातें बाली जाती है, तो उसके मन में बैठ जाती है, और वह भी यही सपने देखने लग जाता है, कि अच्छा भविश्य नौकरी में ही है। कुछ युवा अपने परिवार की स्थिति को अच्छा करने के लिए नौकरी करना चाहते है तो कुछ, पद व प्रतिश्ठा के लिए। ' डिप्टी कलेक्टरी' कहानी का पात्र परिवार में अपनी जगह बनाने के लिए, दिन–रात पढ़ाई करता है, ताकि वह डिप्टी कलेक्टर का उच्च पद प्राप्त करके दिखा सके कि, वह भी इसी परिवपर का सदस्य है, वह भी परिवार का नाम ऊंचा कर सकता है, वह नकारा नहीं है।[11] इसी प्रकार 'इंटरव्यू' कहानी में भी द ार्शाया गया है कि कितने युवा बेरोजगारी के कारण नौकरी का तला ा में भटक रहें है। इस कहानी में द ार्शाया गया है कि एक नौकरी के लिए कितने युवा सुबह से लेकर भााम तक इंटरव्यु का इंतजार करते रहते है, ताकि उन्हें नौकरी मिल सके। युवाओं के लिए नौकरी जीवीका उपार्जन के साथ–साथ उनका भविश्य भी निर्धारित करती है।[12]

निश्कर्श, अमरकांत की कहानियों में युवा वर्ग का स्वरूप अत्यंत मर्मस्प र्शी व विस्तृत है इन्होंने अपनी कहानियों में युवा वर्ग की उन्हीं स्थितियों का वर्णन किया है, जो उन्होंने भोगी व नजदीकी से देखा और अनुभव किया था। उसी की अभिव्यक्ति उनके साहित्य में देखने को मिलती है। इन्होंने युवा वर्ग की किसी भी समस्या को नकारा नहीं बल्कि अपनी कहानियों में स्थान देकर उसका समाधान खोजने का प्रयत्न किया है। अमरकांत ने स्वयं कहा है कि ''एक रचना रचनाकार से मांग करती है जीवन, समाज और जनता के निकट रहने की, उनसे कदम–कदम पर सिखने की,रचना के साथ घोर परिश्रम करने की, व पठन–पाठन की आव यकता होती है'' इनकी कहानियाँ समाज में व्याप्त युवाओं के संघर्श से

लेकर उनकी समझदारी तक का वर्णन करती है, कि किस प्रकार युवा अति कल्पना ीलता की वजह से बुरी संगति में पड़ कर गलत कार्य करने लग जाता है, लेकिन उसे समझ आने पर अपनी समझदारी से दोबारा जीवन को नए सिरे से भाुरू भी करता है। अमरकांत ने जिन मुद्दों को अपनी कहानियों में उठाया वे आज भी वैसे ही देखने को मिलते है, बस फर्क केवल इतना है कि उनमें दो–चार विशय ओर जुड़ गए हैं। अमरकांत ने युवा वर्ग को गहराई से देखा व समझा फिर उसका विश्लेशण करके कहानी साहित्य में स्थान दिया है। इस दृश्टि से अमरकांत की कहानियों में युवा वर्ग का स्वरूप हिंदी कथा साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

[1] अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खण्ड-1 पृष्ठ 63
[2] अमरकांत का संपूर्ण कहानियाँ खण्ड-2 पृष्ठ 107
[3] अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खण्ड-1 पृष्ठ 107
[4] अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खण्ड-1 पृष्ठ 139
[5] अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खण्ड-1 पृष्ठ 143
[6] अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खण्ड-1 पृष्ठ 142
[7] अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खण्ड-1 पृष्ठ 115
[8] अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खण्ड-1 पृष्ठ 125
[9] अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खण्ड-1 पृष्ठ 178
[10] अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खण्ड-2 पृष्ठ 496
[11] अमरकांत का कथा साहित्य ‘संवेदना और विकास’ डाॅ मनोज कुमार- पृष्ठ 206
[12] अमरकांत एक मूल्यांकन , रविन्द्र कालिया, संपादक नई दिल्ली, -पृष्ठ 115
[13] हॉज, पी. एम. (2025). एलेक्सिस एम. स्मिथ के मैरो आइलैंड में इको-थियोलॉजी और क्रिश्चियन एनवायरनमेंटलिज़्म का विरोधाभास। शोधज्ञान-NU: जर्नल ऑफ़ लिटरेचर एंड कल्चर स्टडीज़, 3(1), 1–7.
[14] जेयारानी, जे., वासनाथन, आर., और तुंगोए, सी. (2025). नॉर्थईस्ट इंडिया में लाइफलॉन्ग लर्निंग और करियर डेवलपमेंट: नागालैंड में प्रोफेशनल्स का एक अध्ययन। शोधज्ञान-NU: जर्नल ऑफ लिटरेचर एंड कल्चर स्टडीज, 3(1), 8–14.
[15] ब्रैगेंटिन, टी. जी. दा जी. (2026). हेनरी बर्गसन की हंसी के लेंस से श्रीलाल शुक्ला की 'वन हैप्पी डे' का एनालिसिस। शोधज्ञान-NU: जर्नल ऑफ़ लिटरेचर एंड कल्चर स्टडीज़, 4(1), 24–26.